Bal Bharati PUBLIC SCHOOL
NEELBAD, BHOPAL

TEACHER'S TRAINING /WORKSHOP REPORT-

DATE & DAY OF SESSION : 13/04/2021. & Tuesday

ORGANISED BY : COE Bhopal - 6

T0PIC OF THE SESSION : हिंदी भाषा के गद्य पद्य एवं व्याकरण का शिक्षण

TIME OF ONLINE SESSION : 4:30 pm to 5:30 pm

NAME OF RESOURSE PERSON : Smt. Sangeeta Sanghvi , Kolkata

ATTENDED BY : Ms. Anuradha Shrivastava

SUBJECT MATTER- भाषा शिक्षण के द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास पर महत्व देना।

वर्कशॉप में भाषा शिक्षण में गद्य पद्य और व्याकरण का शिक्षण इस प्रकार से कराया जाए यह समझाया गया। रसात्मकं वाक्यं काव्यं वाक्य मेथी कौन सी रचना जो विचार प्रधान होती है। विश्लेषण विवेचन का आधार व्याकरण है। भाषा के माध्यम से बच्चों की रुचि का विकास आनंदा नुभूति होती है।

पद्य में काव्य शिक्षण के स्तर प्रत्येक कक्षा के अनुसार कविताओं का स्तर होता है। अमिता सिखाने का उद्देश्य रसास्वादन की सीमा तक ले जाना होता है। बच्चों को अलग-अलग स्तर पर अलग-अलग तरीके से कविताओं का पाठ करना चाहिए।

•**प्राथमिक स्तर पर शिक्षण विधि:-** प्राथमिक स्तर पर शिक्षण की तीन विधियां बताई गई-

1. अर्थ उद्बोधन विधि
2. रसास्वादन विधि
3. अभिनय विधि

* इन तीनों विधियों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर बच्चों को कविताएं पढ़ आनी चाहिए जिसमें अभिनय कविता का गायन सबसे आवश्यक होना चाहिए।

• **माध्यमिक स्तर पर शिक्षण विधि:-** माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में कविताओं के मुख्य भाव ग्रहण की क्षमता विकसित करना होता है। माध्यमिक स्तर पर काफी शिक्षण की प्रणालियां होती है-

1. गीत प्रणाली
2. अभिनय प्रणाली

3. अर्थ कथन प्रणाली – में व्याख्या प्रणाली, दंडान्वय प्रणाली , खंडान्वय प्रणाली , तुलनात्मक प्रणाली और समीक्षा प्रणाली के बारे में बताया।

गद्य शिक्षण की विधि: - उर्दू साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है जिसमें अलंकार छंद इत्यादि का निर्वाह करना आवश्यक हो जाता है। गधे की विशेषता तथ्यों को सर्वमान्य भाषा के माध्यम से ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना होता है उपन्यास निबंध संस्मरण आदि गद्य साहित्य की विधाएं हैं।

शिक्षण के अनेक उद्देश्य होते हैं

मातृभाषा का प्रयोग करना

शब्दों का प्रभावशाली प्रयोग करना

शब्द भंडार की वृद्धि करना

संक्षिप्त जीवनी लेखन क्षमता का विकास

लिपि के मानक रूप का व्यवहार करना

अमृतधारा भाषा का प्रयोग

गद्य शिक्षण की अनेक प्रणालियां होती है - अर्थ कथन प्रणाली ,व्याख्या,विश्लेषण, समीक्षा और संयुक्त प्रणाली।

व्यवहारिक व्याकरण शिक्षण विधि:-

आशा शिक्षकों द्वारा रोचक एवं आकर्षक विधि द्वारा ज्ञान कराते हुए ध्वनि वर्तनी वचन शब्द लिंग क्रिया अथवा काल इत्यादि विकारों को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए इसके अंतर्गत उदाहरण प्रश्न उत्तर नियमीकरण इत्यादि शिक्षण विधियां अपनानी चाहिए।

इस प्रकार वर्कशॉप में हिंदी काव्य, गद्य एवं व्याकरण की अनेक विधियों से परिचय हुआ।

महोदया ने ये सभी शिक्षण विधियां बहुत ही रोचक तरीके से समझाईं ।

Report presented by

ANURADHA SHRIVASTAVA